शोध - ऋतु Shodh-Rityu

PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-15 VOLUME-1 IMPACT GIF-1.7216 SJIF-6.154 ISSN-2454-6283 जनवरी-मार्च,2019

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist Parbhani

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna
Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist Parbhani

32.स्त्री–मुक्ति की पक्षधर संत मीराबाई का काव्य

–डॉ.विजय शिवराम पवार
श्री गुरु बुध्दिस्वामी महाविद्यालय,पूर्णा (ज) जि. परभणी

वर्तमान में साहित्य सृजन के माध्यम से स्त्री लेखन के विविध आयामों को समाज के सम्मुख रखकर स्त्री संबंधी विभिन्न समस्याओं, प्रयासों और सुझावों को प्रस्तुत किया जा रहा है। भारतीय समाज यह पितृसत्ताक समाज के लिए जाना जाता है, जिसका मुखिया पुरुष होता है। संपत्ति पर अधिकार हो या वंशनाम सभी पर पुरुष की भूमिका अग्रणी होती है। जब सारे अधिकार जन्म लेते ही एक पुरुष को प्राप्त हो जाते है, तब स्त्री अपने परिवार में उसकी खुद की भूमिका के बारें में सोचने पर विवश होती है, क्योंकि वह समाज में अपने आप को एक निम्न दर्जे के पायदान पर पाती है। सामान्यतः स्त्री का खस्ताहाल होने का कारण यह भी है कि, वह एक पुरुष पर निर्भर होती है। इसीकारण उसका शोषण और उत्पीडन आज भी समाज में देखने को मिलता है। पौराणिक काल से ही स्त्री को भारत में महान रुप में सामने लाया गया है। लेकिन स्थिति इसके विपरित ही देखी जा सकती है, क्योंकि भारतीय समाज में आज भी स्त्रियों को बडी आसानी से दहेज के लिए मार दिया जाता है, तो कहीं घर से निकाल दिया जाता है। लेकिन वह उफतक नहीं करती क्योंकि, परंपरागत सोच के कारण वह मानती है कि उसे तो इस धरती पर केवल सहने के लिए ही इस भूतल पर अवतरित होना पडा। स्त्री यदि विरोध करें तो उसे पुरुष द्वारा षडयंत्रों से प्रताडित होना पडता है। पुरुषप्रधान संस्कृति का एक तरीका यह भी है कि, किसी भी अच्छी स्त्री में ऐसी बुराई आरोपित करो की उसके संघर्ष की धार ही कम हो जाए। ऐसे भारतीय संस्कृति में अस्मिता की तलाश के लिए संघर्षरत स्त्री की समस्याएँ हर युग में प्रासंगिक लगते हैं। अतः कहा जा सकता है कि, प्रतिरोध की संस्कृति में स्त्री–लेखन द्वारा स्त्री को प्रतिष्ठापित एवं प्रतिष्ठित करने का संघर्ष जारी है। वैसे देखा जाए तो विगत कुछ वर्षों से 'स्त्री–विमर्श चर्चा' साहित्य में अपना स्थान प्रबल बना चुकी है। स्त्री–विमर्श के माध्यम से साहित्यकार स्त्री समस्याओं से संबंधित वस्तुस्थिति बताने का प्रयास कर रहे हैं। वहीं स्त्री लेखन का एक और प्रयास यह है कि, स्त्री को मनोरंजन तथा विज्ञापन की वस्तु समझे जाने की मानसिकता को बदल दें।

वर्तमान में 'दाज दहेज खालो बहु को जला डालो' की मानसिकता रखनेवाला समाज यह स्त्री–भ्रूण हत्या के माध्यम से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से पूरी स्त्री जाति को ही नष्ट करने का प्रयास कर रहा है। यह स्त्रियों पर किस तरह का ऋण है? जो की ऋणमुक्त होने के लिए वह युगानुयुग की दासता वाली श्रृंखला से मुक्त होने के लिए सोचे? जब तक ऐसी परंपरावध्द शुद्र एवं संकुचितता अमानुष, पाशवी वृत्ति का हुकुमी चाबूक चलाता रहेगा तो स्त्रियों की ओर से भी एक ही माँग विधाता से लगाए जाने की संभावनाएँ होंगी–स्त्री जन्म ही नको! इस भूतल पर स्त्री का जन्म एक कॉच के भाँति ही है। विश्वविधाताने सृष्टि का निर्माण किया! यह निसर्ग या प्रकृति! इसका उपभोग लेने के लिए पुरुष का निर्माण किया। ठीक इसी तरह प्रकृति को सृजनशील बनानेवाली इस जग को क्षमा और शांति का मूलमंत्र बतानेवाली, भविष्य को अपने गोद में खिलानेवाली एवं गतकाल को अपने आँचल में झुलानेवाली स्त्री का भी निर्माण किया! इस स्त्री–निर्मिती के पिछे विधाता का हेतु कुछ भी हो, लेकिन आज मात्र नियतीने एक अलग डोर से स्त्री को बाँध दिया है। इसी कारण वर्तमान में स्त्री याने केवल भोग्यवस्तु। स्त्री याने केवल अश्रु। स्त्री याने केवल करुणा! के अर्थ में समाज ने ग्रहण किया है। ऐसे स्थिति में स्त्री–लेखन की जब बात आती है, तो संत मीराबाई का नाम सहज ही हमारे समक्ष दृष्टिगोचर होता है। भारतवर्ष के इतिहास में कृष्ण–भक्ति परंपरा में एक सशक्त महिला भक्त के रुप में संत मीराबाई का नाम बडे आदर एवं सम्मान के साथ पूरे भारतवर्ष में लिया जाता है। हिंदी साहित्य में ही नही वरन् समग्र भारतीय साहित्य में संत मीराबाई का स्थान स्त्री–लेखन एवं मुक्ति की प्रेरणा के लिए असाधारण माना जा सकता है।

मध्यकाल में स्त्री–मुक्ति एवं स्त्री स्वतंत्रता की पक्षधर संत मीराबाई का जीवन एवं उनका काव्य स्त्रियों के लिए प्रेरक एवं वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं से जूझने के लिए अनुकरणीय है। संत मीराबाई के पद उनके जीवन से संबंधित घटनाओं के प्रत्यक्ष साक्षी हैं। मीरा का विवाह चित्तौड के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था। लेकिन दुर्भाग्यवश विवाह के सातवर्ष पश्चात ही पति की

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna
Estd.1983
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya

मर्यादा, सिर सी दूर करि। मान अपमान दोउ घर पट के निकसी ज्ञान गली॥" एक स्त्री होने के नाते मीरा को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वह घायल हुई है। उसकी व्यथा को पहचानने वाला कोई नहीं है। इन समस्याओं का सामना करने के लिए मीरा तैयार हो चुकी है। उसकी पीडा कोई नहीं जानता है। उसका दर्द वही जान पाता है जो घायल हुआ हो। "दरद दीवानी न सः दरद न जान्य कोई। घायल की गति घायल ही जान्यो अगण संदोय।"

भारतवर्ष के इतिहास में एक महिला कृष्णभक्ति परंपरा में संत मीराबाई का नाम आता है। हिंदी साहित्य में ही नही बल्कि समग्र भारतीय साहित्य में स्थान महत्वपूर्ण माना जा सकता है, अतः इनका कार्य असाधारन कार्य में गिना जा सकता है। वर्तमान स्त्री लेखन की प्रेरणा मीरा के जीवन एवं काव्य से ही मिली है। भारतीय इतिहास के मध्यकाल में पहली बार मीरा ने उन सभी बंधनों रुढियों एवं परंपराओं का विरोध किया था, जिनका पालन करना एवं सामंती समाज द्वारा निर्धारित मर्यादाओं में रहना स्त्रियों के लिए अनिवार्य था। मीराबाई स्त्रियों से संबंधित गलत रूढि–परपराओं एवं पूरूष वर्ग के अनुचित दबाव से मुक्ति पाना चाहती थी। वस्तुतः मीरा का संघर्ष स्त्री को उसकी वास्तविक गरिमा और महत्व प्रदान करता है।इसी कारण संत मीराबाई का जीवन एवं काव्य परपरा से चली आ रही स्त्री की दासता एवं बंधनों से मुक्ति की प्रेरणा देती है। वास्तविक रूप से देखा जाय तो उसमें स्त्री पुरूष दोनों को समान महत्व प्रदान किया गया है। जो प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से स्त्री अस्मिता एवं स्त्री स्वाभिमान की रक्षा करते हुए स्त्रियों को अमानवीय बंधनों एवं मर्यादाओं से मुक्ति पाने के लिए प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1.भक्त बावनी ग्रंथ में मीराबाई : श्री ब्रजेंद्र कुमार सिंहल 2.मीराबाई की पदावली, सं.परशुराम चतुर्वेदी 3.हिंदी साहित्य का इतिहास: संपादक: डॉ. नगेंद्र 4.मीरा का पुनर्मूल्यांकन – सं.सुरेश गौतम 5.भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य – मैनेजर पांडेय 6.मध्यकालीन हिंदी कवयित्रियाँ – सावित्री सिन्हा

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Dist. Parbhani Estd.1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani